समाज में बिखरते परिवार की त्रासदी: सुरेन्द्र वर्मा के नाटक 'द्रौपदी' पर आधारित

Smti. Nita Samadder,

MA(Hindi) & UGC NET

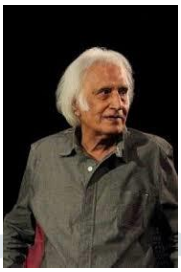

"सुरेन्द्र वर्मा" हिन्दी साहित्य जगत के एक सुप्रसिद्ध नाटककार है। हिन्दी नाटक पंरपरा में 'मोहन राकेश' और 'जयशंकर प्रसाद' की तरह की नाटयार्थ को आगे बढ़ाने तथा अभिनयेता को सशक्त बनाने वालो में "सुरेन्द्र वर्मा" की प्रमुख भूमिका रही हैं ।उन्होंने हिन्दी नाटक एवं रंगमंच को नई दिशा प्रदान किया है।उनका जन्म ७ सितम्बर १९४१ई० को उत्तर प्रदेश झासी (मध्यप्रदेश) में हुआ। वे एक आधुनिक समकालीन के सिद्धहस्त नाटककार के साथ-साथ नई पीढ़ी का प्रयोगशीलता नाटककार भी कहा जाता है।

उनके नाटक जीवन और संसार की व्यापकता से जुड़े हुए नाटक है। उनके नाटकों का शुरुआत ही मानव जीवन जैसे स्त्री पुरुष संबंध, परिवार और समाज का अध्ययन करते हुए फिर व्यक्ति पर आकर ही समाप्त होता है। उनका नाटक का केद्र बिन्दु व्यक्ति ही होता है और इन्हीं परम्परा को बढ़ते हुए, मोहन राकेश के " आधे-अधूरे" की प्रभाव उनके नाटक " द्रौपदी " में मिलता है । द्रौपदी १९७० ई० को लिखा गया है। जिसमें एक ही अभिनेता से पाच पात्रों की भूमिका रखने वाले मोहन राकेश की रंग- युक्ति को सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटक द्रौपदी में अपनाया है और एक मुखौटों का प्रयोग करते हुए एक ही अभिनेता से पांच रूपों की भूमिका करवाने का नाटय- निर्देश किया है। इस नाटक द्रौपदी शीर्षक के विषय मे 'जयदेव तनेजा' का कथन है कि-

"स्त्री की भूमिका प्रमुख नहीं हौने के कारण शीर्षक भ्रामक है क्योंकि नाटक की अपने पुरूष के विभिन्न व्यक्तियों को उतना नहीं झेलती जितना वह पति स्वयं झेलता है और उसका आंतरिक टूटन- छटपटाहट उसके बच्चों की जिंदगी में समा जाती है तो नाटक और भी ज्यादा करूणा और त्रासदी प्रतीत होने लगता है । लेकिन तनेजा यह मानते हैं कि नाटक के शिल्प में नयापन हैं।" [7]

द्रौपदी नाटक में विवाहेतर जीवन की विसंगतियों से बिखरे परिवार की त्रासदी है। सुरेखा की पति मनमोहन जो नाटक के नायक है जिस की व्यक्तित्व खंडित है, उनका चरीत्र अनैतिक, महत्वाकांक्षी, अर्थ-लोलुप, कामुक और आत्मान्वेषी भी है। उसके ये अलग- अलग रूप ही सुलेखा के लिए पांच पति बन गये हैं। सहेगा के इस विषय पर कहना है कि-

"मेरे पति एक नहीं है, यथा की- जैसे अब वो आदमी एक नहीं, एक से ज्यादा है । वह कहती है कि वह कभी मुझे ऊपर से छूकर ही संतोष पा लेता है तो कभी मेरी बोटी- बोटी नोंच डालता है।" [5]

इसी आधार पर वे अपनी नाटक को आगे ले चलते हैं जो धीरे- धीरे बिखरते परिवार और उसी में घुटते व्यक्ति की त्रासदी है । यह नाटक वर्तमान समय परिस्थितियों से सीधे साक्षात्कार करवाता है। यह नाटक आज के आधुनिक जीवन काल की विसंगतियों और धटनाओं के विषय में आधुनिक मानव के खण्डित व्यक्तित्व की पहचान, अंधविरोधी और उसकी सम्पूर्णता की तलाश को आगे बढ़ता है।

"मानवीय सम्बन्धों के बिखरने- टूटने और साथ ही बदलते नैतिक मूल्यों और काम सम्बन्धों को केन्द्र में रखकर सम्पूर्ण नाटक लिखा गया है। समकालीन परिस्थितियों के दबाव से व्यक्ति किस प्रकार टुकड़ों में बॅटिंग जाता है और एक साथ ही कई जिंदगियां जीता है और इसलिए कुण्ठित होता है। " [1]

सुलेखा आधुनिक द्रौपदी है जो अपने पति और उसके मुखौटों से सामना करतीं हैं। यह नाटक उसके समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है और उसे ही इन रूपों का दण्ड भुगतना पड़ता है। द्रौपदी नाटक में आज की

मानव की नियति की तलाशा गया है, जो धन और ऐश्वर्य के साधनों की प्राप्ति में स्पधाग्रस्थ सुरेश का विचार है कि-

" गिनी- चुनी चार छः वस्तुओं से मैंने अपनी गृहस्थी बसायी थीअब बहुत कुछ है मेरे धर मे, लेकिन बहुत कुछ नहीं भी है। उसी को पाने की दौड़ चल रही है। "[2]

व्यक्ति अपनी जीवन की इसी दौड़ में अकेला रह जाता है और टूट भी जाता है। आज की जीवन के अधूरेपन, अजनवी, तन्हाई और आपना पहचान खोए जाने का गहरा अनुभव हमे द्रौपदी की पात्रों जैसे सुरेश, मंदा, अलका और मनमोहन आदि के द्वारा व्यक्त होता है।

प्रस्तुत नाटक में मध्यमवर्गीय परिवार की प्रगति की कहानी कही गई है। मनमोहन अपने मध्यमवर्गीय परिवार को उच्च मध्यमवर्गीय बनता है। इस उन्नति के लिए वह धन प्राप्ति के ऐस कोशिशें करता हैं जो आज के हर उस व्यक्ति को व्यक्त करते हैं, जो हर अवस्था में धन पार्जन करना चाहता हो। वह इस भाग-दौड़ की जीवन में अपनी पत्नी से ऊब गया और इसी ऊब को दूर करने के लिए अन्य औरतों से संबंध बनता है पर जहाँ उनको वैसा ही अनुभव होता है। किंतु उसे एक सत्व भी रहता है कि वह एक अच्छें आदमी के लक्षण लिए हुए है लेकिन उसकी बुरी आदतें उस पर हावी हो जाता है।

मनमोहन के परिवार के माध्यम से समाज की एक बड़ी समस्या को दर्शाया गया है कि परिवार में जैसा परिवेश रहता है जो कुछ होता है या फिर बच्चों को जैसे संस्कारों से सिंचाई है। बच्चे भी वैसे ही बनते हैं। इसे नाटक में सुरेश और मनमोहन के दो बच्चे अलका और अनिल है। मनमोहन के स्वच्छन्द और कुत्सित रूपों का प्रतिबिंब और संस्कार उसके बच्चों के जीवन में पूर्णतः लक्षित होता है । दोनों बच्चों में दुर्गुणों के दर्शन हो जाते हैं। अलका, राजेश और अनिल, वर्षा यौन कुंठाओं से ग्रस्त हैं।प्यार प्रेम-प्रदर्शन को यहाँ यौन प्रदर्शन बना दिया है। दोनों ने ही यौन वर्जनाओं को बन्धन को तोड़ दिया है। उन्हीं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील भी है। यह नाटक आधुनिकता बोध के विसंगतियों का दस्तावेज़ है और अपनी सवेरा में मोहन राकेश के आधे- आधूरे करीब है। इस तरह यह नाटक व्यक्ति, परिवार के खंडित हो जाने के साथ संस्कृति के पतन को भी दर्शता है। वर्तमान

समय में यह हर विकृति की सिमा का उलंघन कर दिया है इस विश्व में डाला चन्द्रशेखर इस तरह व्यक्त करते हैं-

" सभी निषेधो, प्रतिबंधों, वर्जनाओं और परहेज से सदैव मुक्त होकर नई-नई किताबों की तलाश ही जीवन है। समग्रत:प्रस्तुत नाटक समकालीन व्यक्ति के आत्मा विभाजन की उन दिशाओं को अनावृत्त करता है जो विसस्कृतिकरण की यांत्रिक प्रक्रिया से उत्तरोत्तर भयंकर विदेश होता जा रही हैं। "[3]

यह संस्कृति और हमारे परंपरा की विदुपता नही तो और क्या है। द्रोपती नाटक मे रिस्तो का लिहाज़ ना रखते हुए मा बेटी और भाई बहन की मर्यादा को पूरी तरह से टूटते हुए दिखाया गया है। समय की बदलती परिस्थितो के कारण बच्चो के साथ दोस्तो की तरह व्यवहार को सही ही मान लिया जाए तो भी बेटी से प्रेमी के साथ शरीरिक संबंधों की आलोचना मन में जुगुप्सा ही जगाती है जो इस प्रकार है-

"प्रत्येक युग की अपनी विचार धारा, विशेष भावनाए तथा विशेष दृष्टिकोण होता है जो उस युग के साहित्य में प्रतिफलित होता है ।" [4]

द्रौपदी नाटक मानवीय संबंधों के बिखराव और टूटने को प्रस्तुत किया है इस नाटक में बदलते नौतिक मूल्यों और काम-संबंधो को केंद्र पर रखकर रचा गया है। भौतिक साधनों और धन की अॅधी दौड़, आपाधांपी और हालतों के दबाव में नाटक का नायक मनमोहन वह अपनी सभी रिश्तों को पीछे छोड़ता हुआ जाता हैं वह इस अंधी दौड़ में वह अपनी, जमीन से, घर से कट जाता हैं, इसके अलावा अपने-आप से, पत्नी और बच्चों से और सबसे महत्वपूर्ण अपने सुकून और शांति से दूर होता चला जाता हैं । उसकी पत्नी सुरेखा को यह अनुभव होता है कि पति मनमोहन कई हिस्सों में बट गया है वह तभी घर में तो कभी दफ्तर में डूबा रहता है । वह संबंहीनता उसे ग्रस्त लेती है इसी पर डा॰ ब्रजराज किशोर का कथन है कि-

"आत्मघाती किंतु स्वयंवर इन स्थितियों में वह जीवन, सुख, तृप्ति नयापन और ताजगी की तलाश में कभी अंजान के पास जाता है, कभी रंजना के पास, तो कभी

वंदना के पास । लेकिन सब मृगमरिचिका ही सिध्द होता है।पानी नहीं मिलता, प्यास नहीं बुझती, सुरेखा नामक अंजली से एक-एक बूंद पानी रिसने की अनुभूति के बाद अंजना और दूसरी अंजलियों में जीवन दायी पानी की तलाश मनमोहन को कहा नहीं भटकाती।"[6]

द्रौपदी में ये चार पात्र अलका- राजेश तथा अनिल- वर्षा के पारिवारिक बिखराव के ओर संकेत करते हैं । नाटक में मानव जीवन की तनावों से टूटते पति-पत्नी का बदलते परिस्थिति हम को ईट-पत्थर का मकान में बदल देता है। दोनों ही पात्रों अपने- अपने नगरीय से नीरसता से संसार निभा रहें हैं। इसमें बेटा नगरों की आज के काल के आदतों का शिकार तथा बेटी तो एक क्लास के बहाने अपने प्रेमी के साथ पिक्चर तथा संबंध स्थापित करती हैं।

द्रौपदी नाटक से यह तो स्पष्ट है कि स्त्री- पुरूष संबंधों से उत्पन्न उसके माध्यम तनाव, दिन भर की व्यवस्थ जीवन, पारिवारिक टूटने और परिस्थितियों के दबाव में अंदर घटते तथा खोखले हो चुके समकालीन व्यक्ति की निर्मम और वाला सच्ची जीवन का प्रस्तुत किया गया है। जिसमें नाटक के पात्र यथार्थ से धिरे और उलझते- झेलते अधूरेपन और पूरेपन की तलाश करते है। इस नाटक में सुरेन्द्र वर्मा ने आधुनिक समाज व्यवस्था, टूटते परिवार तथा भौतिकवादी पध्दति को प्रत्यक्ष प्रस्तुत किया है । इसे सुरेन्द्र वर्मा का यह नाटक व्यापक अर्थ में टूटते पारिवारिक सम्बन्धों अर्थ एवं ऐश्वर्य के चाह में दौड़ते मानव, पाश्चात्य सभ्यता के पीछे दौड़ते अंधी युवा वर्ग उच्च व उच्च मध्यवर्गीय काम चेतना तथा आधुनिक शहरी मानव का जीवन चित्रण को सार्थक रूप से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. समकालीन हिंदी नाटककार, गिरीश रस्तोगी पृष्ठ-६२ संस्करण-२००८ लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. तीन नाटक, सुरेंद्र वर्मा, पृ -९०, संस्करण -२००६, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. समकालीन हिंदी नाटक: कथ्य चेतना, डा° चंद्रशेखर ६६

4. गध पथ, सुमित्रा नंदन पंत १४७

5. तीन नाटक, सुरेंद्र वर्मा - पृ ९२६

6. डा॰ ब्राजराज किशोर, हिंदी नाटक और रंगमंच : समकालीन परिदृश्य - पृ ६६

7. जयदेव तनेजा, आज के हिंदी रंग नाटक - पृ १३३-१३४

Smti. Nita Samadder, MA(Hindi) & UGC NET
Email: nitaroy29512@gmail.com
9531843147